Lecture No - 06

Name of the college . A. P. S. M. College, Barauni, Begusarai
L. N. M. V. Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt - A.I.H. & C
Lession Plan for Class - BA Part II (H) Paper IV
Date - 25-06-2021

Name of the Topic - महावलिपुरम मंदिर

महावलिपुरम मंदिर :— में दस खुदे मंडप हैं जिनमें धर्मराज, महिसासुर, पंच पांडव, वराह उल्लेखनीय हैं, जो मुख्य पर्वत में खुदे हैं। प्रायः सभी मंडप सामने 25 फुट चौड़े और 20 फीट ऊँचे हैं। कोठरियों सहित मंडप 25 फुट गहरे हैं, जिनमें स्तंभ की ऊँचाई नौ फुट है। कोठरियाँ चौकोर एवं 10×5 वर्ग फुट क्षेत्रफल में बनी हैं। सामने का माथा कुडु सहित बने हैं। मंडपों की यही विशेषता है कि सभी शिल्प कला के सुंदर अलंकार से युक्त हैं। मंडपों के स्तंभ प्रचुर मात्रा में खुदे भी हैं।

महेन्द्र शैली की दूसरी अवस्था (Phase) में रथों का निर्माण हुआ। इनको बालू के भीतर किस उद्देश्य से खोदा गया था, यह एक रहस्य है। सभी रथ अकेला, बिना लक्ष्य के खड़े हैं। जिनकी अंदरूनी खुदाई असमान है। इनसे मंदिर-निर्माण में कितना उत्साह एवं प्रोत्साहन मिला होगा, यह अज्ञात सा है। रथ की कल्पना रहस्यमय कल्पना थी। जिसे शैली बनावट इमारतों की अभी तक गूढ़तम समझते हैं।

महावलिपुरम के रथ अनेक विशाल चट्टान से निर्मित न हुए, क्योंकि उनका क्षेत्रफल सीमित था। ये 42 फुट लंबे, 35 फुट चौड़े तथा 40 फुट ऊँचे आकार में हैं। उनकी संख्या सात होने से 'सात पगोड' (Seven Pagodas) के नाम से विख्यात हैं। ब्राउन का मत है कि दोनों बौद्ध मठ तथा चैत्य मंदिर के अनुकरण पर तैयार हुए हैं। सात पगोड़ा निम्नलिखित हैं

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(1) द्रौपदी रथ (2) अर्जुन रथ (3) धर्मराज रथ
(4) नकुल - सहदेव रथ, (5) भीम रथ (6) गणेश रथ और
(7) किनारे का मंदिर।

द्रौपदी रथ सबसे छोटा है, सादा यानी अलंकरणरहित है तथा पूर्णतया खुदा है एकाश्म रथों का स्थापत्य प्राचीन बौद्ध विहारों पर आधारित होने के कारण चौकोर या आयताकार है। ब्राउन ने इनका उल्लेख 'विहार रथ' के नाम से किया है। संभवतः वर्गाकार आँगन में स्थित कोठरी के स्वरूप से रथ का विकास हुआ। ऊँचाई में ये पिरामिड या गोली के आकार के है। प्रायः सभी रथ दो मंजिल के है। प्रत्येक छत पर उन्नतोदर (Convex) रूप में कार्निस दीख पड़ती है। जिनको चैत्य वातायन सदृश मेहराब से अलंकृत किया गया है। दक्षिण भारत में उसे 'कुडु' कहते है। रथ की निचली दीवार में भित्तिस्तंभ बने है; तथा ऊपरी मंजिल छोटे मंडप से घिरी है। नकुल-सहदेव रथ योजना में चौकोर था, परन्तु कुछ आयताकार भी बने है। सभी रथों की परिकल्पना एक सी नहीं है। ऊपरी भाग में गुंबज को 'स्तूप या स्तुपिक' कहते है। गुंबज मेहराबी आकार के भी है। इसी को ध्यान में रखकर मूलतः द्राविड़ शैली के दो प्रकार (1) मीनाररहित विमान तथा (2) विशाल मार्ग द्वार गोपुरम विकसित हुए थे।

भारती कुमारी
A.I.H.C.&C
Date 25-06-2021

Scanned with CamScanner